शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र (अर्ली इंटरवेंशन सेंटर) के स्थापना पर संक्षिप्त नोट

- प्रारंभिक बाल्यावस्था (0-6 वर्ष) मस्तिष्क विकास का प्रमुख समय होता है। यह एक ऐसी महत्वपूर्ण अवधि होती है जो किसी व्यक्ति की अपने आजीवन स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक क्षमता प्राप्त करने की क्षमता को निर्धारित करती है। यदि बच्चे को जीवन में आरंभ में ही गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक उपचार प्राप्त हो जाता है तो उसे एक ऐसा आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद मिल जाती है जिससे कि वह एक स्वतंत्र और गरिमामय जीवन व्यतीत करने के लिए सक्षम बन जाता है।
- प्रारंभिक उपचार में ऐसे शिशुओं और युवाओं को जिनमें दिव्यांगता होने का खतरा है अथवा जो दिव्यांगता से ग्रस्त हैं और/अथवा जिन्हें विकास में देरी संबंधी समस्या है और उनके परिवारों को उनके विकास, स्वास्थ्य और परिवार और सामुदायिक जीवन में भागीदारी के लिए विशेष सहायता तथा सेवाएं प्रदान की जाती हैं।
- दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रायोगिक आधार पर 7 राष्ट्रीय संस्थानों (एन.आई) और 7 समेकित क्षेत्रीय केंद्रों (सी.आर.सी) में एकल खिड़की प्रारंभिक उपचार केंद्र स्थापित करने की प्रक्रिया में है:

- **जांच और पहचान**
  - खतरे वाले मामलों की पहचान के लिए सुविधाएं
  - उचित पुनर्वास सेवाओं के लिए रेफर करना
- **चिकित्सीय सेवाएं**
  - स्पीच थेरपी
  - आक्यूपेशनल थेरपी
  - फ़िज़ियोथेरपी
- **काउंसलिंग**
  - अभिभावक की काउंसलिंग
  - मित्रों (पीयर) की काउंसलिंग
- **स्कूल भेजने के लिए तैयार करना**
  - संवाद और भाषा विकास
  - शारीरिक विकास
  - व्यक्तिगत, सामाजिक और भावनात्मक विकास

ये केंद्र 6 महीने की अवधि में चालू हो जाएंगे। इसके बाद जुलाई, 2022 तक शेष 13 सी.आर.सी में ऐसे केन्द्र स्थापित किए जाएंगे।